मासिक—

मानव मन्दिर

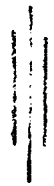

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 10	बुधवार 10 अगस्त, 1983	संख्या 4

ज़बान से तुम बेशक माला फेरते रहो, राम-राम जपते रहो, अल्लाहू करते रहो, राधास्वामी जपते रहो, पाँच नाम सुमिरन करते रहो, अगर यह हालत तुम में नहीं आई कि दुनिया के हालात और वाक़यात में रहते हुए आपको अगर चिन्ता, फ़िक्र और ग़म नहीं व्यापता तब तो तुमको नाम की प्राप्ति मिल गई और अगर नाम जपते हुए तुमको चिन्ता भी आती है, फ़िक्र भी आता है, ग़म भी आता है, तो फिर वह नाम नहीं। वो नाम नहीं है।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि वह नाम जहाँ काल नहीं व्यापता क्या वह नाम है या यूँ ही सन्तों ने ऊटपटाँग लिख दिया हुआ है, पागल बनाया हुआ है दुनिया को? वह नाम है। उस नाम को सन्त कहते हैं :—

नाम रहे चौथे पद माहिं।
यह ढूंढे त्रिलोकी माहिं॥

वह नाम है चौथे पद में। चौथा पद क्या होता है? एक जिस्म, एक मन और एक हमारी आत्मा, जो तीनों दर्जों से निकल कर ऊपर जा सकता है यानि इन तीनों के; जिस्म के एहसासात को मन के ख्यालात को और आत्मा के आनन्द के

भावों में जो नहीं फँसता और इससे आगे जा सकता है उस आगे जाने की अवस्था का नाम है नाम की प्राप्ति। पुरुषोत्तम दास! सुन रहा है? क्या कह रहा हूँ मैं।

अब मेरे दिल में यह सवाल पैदा होता है कि हमको तो भई यह सुमिरन, ध्यान बताया गया है, सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, शून्य, महाशून्य, भँवरगुफा या भूर् भुवः स्वः महः जनः तपः जितने दर्जे हैं षट्-चक्र जिस्म के, निचले दर्जे शरीर के, शारीरिक ज़िन्दगी के एहसासात, मन की ज़िन्दगी के एहसासात और भँवरगुफा से लेकर सत्तलोक, अलखलोक तक भी यानि सुरत के एहसासात के दर्जे हैं। जब तक कोई आदमी इन दर्जों से गुज़रता हुआ आगे नहीं जायेगा वह चौथे पद में जा कैसे सकता है! तुम बैठो, ध्यान लगाओ, तुम्हारे अन्दर कभी खाज हो जायेगी, कभी मन के अन्दर तरह-तरह के कोई ख्यालात पैदा होने लग जायेंगे तो इसवास्ते नाम चौथे पद में रहता है, उसके हासिल करने के ये ज़रिये हैं और वे ज़रिये, मैंने अभ्यास करते-करते सारी उमर खो दी, उनसे छुटकारा मुझ तुम लोगों की बजह से मिला। जब से मुझ यह पता लगा कि मैं किसी के अन्दर नहीं

जाता तो मेरे अन्तर में जितने भी ख्यालात उठते हैं मैं इनको छोड़ जाता हूँ मगर आप लोग छोड़ नहीं सकते। अगर आदमी को यह ताक़त आ जाये कि वह छोड़ दें तो फिर ज्यादा अभ्यास करने की कोई ज़रूरत नहीं; इन्सान सीधा ही मन के और शरीर के तबक़ों को छोड़ के अपने आप को अपने आप में ठहरा सकता है। मगर यह मुश्किल है। इसवास्ते इसका साधन है और मैं अपनी तरफ़ से इसको आसान कर जाना चाहता हूँ।

सन्तों ने इन दर्जों के नाम रखे हुए हैं:— सहस्रदल कमल, त्रिकुटी, शून्य, महाशून्य, भँवर-गुफा, सत्तलोक, अलख, अगम, अनामी। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने अभ्यास किया है, तू यह जो कुछ किताबों में लिखा हुआ है कि सहस्रदल कमल में घण्टा बजता है, शंख सुनाई देता है, मार कितनी-कितनी सिफ़तें लिखी हुई हैं, क्या ये ठीक हैं? मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ! क्योंकि मैं यह काम करता हूँ, मैं अपने आपको सच्चा बना के रखना चाहता हूँ। मैं कहता हूँ यह ठीक है। यह पहली सहस्रदल कमल की स्टेज जो है! यह है तुम्हारे अपने मन की स्टेज! इस मन में से अनेक

प्रकार की वृत्तियाँ निकलती रहती हैं ; ख्यालात हर वक़्त निकलते रहते हैं। रहते हैं कि नहीं, तुम्हारे निकलते रहते हैं ? क्योंकि अनेक प्रकार के ख्यालात निकलते हैं इसवास्ते इसका नाम इन्होंने सहस्रदल कमल अर्थात् हज़ार पंखुड़ियों वाला फूल रखा हुआ है। अन्दर फल तो कोई नहीं, वह तुम्हारा मन है, उसके अन्तर से जो ख्यालात व विचार निकलते रहते हैं उसका नाम है सहस्रदल कमल। अब वो कहते हैं यहाँ पर, घण्टा बजता है। मैं पूछता हूँ कि कभी किसी सन्त ने कहा है कि घण्टा क्यों बजता है ? कोई घड़ियाल है अन्दर तुम्हारे जो घण्टा बजता है अन्दर ; वह आवाज़ क्यों बजती है घण्टे की ? जो मैंने समझा वह कहना चाहता हूँ। क्यों मुझे यह समझ आई ? क्योंकि मैंने पहले, ज़िन्दगी में, इन दर्जों को पास किया हुआ है। अब मैं लाख कोशिश करता हूँ कि मैं घण्टा सुनूँ या सारंग सारंग सुनूँ या ओंकार सुनूं, अब मुझको वो सुनाई नहीं देते। पहले मैं बसरे बग़दाद में रहा, वहाँ सुनता था। यह पुरुषोतम दास मेरे साथ थे। हम इकट्ठे अभ्यास करते थे, यह सब कुछ मैं देखता था। अच्छा ! रोशनी मिलती है सहस्रदल कमल में पीले रंग की, त्रिकुटी में रोशनी

क , शून्य में रोशनी जिस तरह चाँद को महाशून्य मे अन्धेरा, भँवरगुफा में सूर्य की रोशनी, ऐसे-ऐसे जिक्र थे वहाँ पर। अब मैं सोचता हूँ कि अब जो मैं अभ्यास करता हूँ, अब मुझको निचले नज़ारे (दृश्य) क्यों नज़र नही आते, यह एक सवाल है। मैं बहुतेरी कोशिश करता हूँ, कई बार सोचता हूँ, मैं गुमराह हो गया, मेरा अभ्यास खराब हो गया; यह भ्रम मुझे कई दफ़े आ जाता है। अब दाता दयाल तो हैं नहीं, कोई महात्मा नहीं, जिस किसी से कि पूछूँ कि इसमें राज क्या है। जो कुछ मेरी समझ में आया वह मैं बता देता हूँ दोस्तो! मगर मुझे कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ वही final है। मेरी ज़िन्दगी सच्चाई से गुज़र गई, उमर मैंने खो दी सारी, अब मैं समझता हूँ कि पहली स्टेज में घण्टा क्यों बजता है। जिन शख्सों के मन के अन्दर संसारी स्थूल पदार्थों की इच्छाएँ होती हैं जब वह अभ्यास करेंगे उनको घण्टे की आवाज़ सुनाई देगी। क्यों ? बाहर की धातुओं को मिलाकर हम घड़ियाल बना लेते है, उन पर ठोकर मारते हैं तो घण्टे की आवाज़ आती

हमारे मन के जो ख्यालात हैं इसमें भी पृथ्वी, पानी, हवा, आग और आकाश पाँच तत्त्व मौजूद हैं

तो जिस शख्स के अन्तर दुनिया की इच्छाएँ रहती, दौलत की, इज्जत की, सन्तान की, इस तरह Gross Matter की, वह जब भी अभ्यास करेगा तब उसके अन्दर घण्टा बजेगा। चूँकि मैं अब इस आजार (झंझटों) से आजाद हो गया हूँ इसलिए मैं लाख कोशिश करूँ मुझे घण्टा नहीं सुनाई देगा। यह मेरी समझ में आया है। पुरुषोत्तम दास! तू मेरा मित्र है, मैं आप हैरान होता हूँ कि मैं बहुतेरी कोशिश करता हूँ कि फिर घण्टा सुनूँ या रारंग सुनूँ, अब नहीं सुनाई देता अब वह आखिरी शब्द सुनाई देता है जिसको सार शब्द बोलते हैं। तो मैंने यह समझा है। तो फिर मैं किस नतीजे पर आया? कि, त्रिकुटी पर क्या होता है? लाल रंग नजर आता है, गुरु की मूर्त्ति नजर आती है, त्रिकुटी के स्थान से तमाम वेद शास्त्र सब निकलते हैं। जितना इल्म है त्रिकुटी से निकलता है यह लिखा हुआ है किताबों में। अब मैं सोचता हूँ क्या यह ठीक है? हाँ यह ठीक है। बाहर में जब मैं किसी चीज को हाथ लगाऊँगा, जोर से पकड़ूंगा, मेरे मुँह पर लाली आयेगी कि नहीं आयेगी, जब मैं जोर से पकड़ूंगा तो। इसी तरह से जब हम अपने अन्तर चलते हैं, मूर्त्ति

बनाते हैं गुरु को या अपने इष्ट की तो हमारे मन को ज़ोर लगाना पड़ता है, चूँकि सूक्ष्म नाड़ियाँ हैं हमारे अन्दर, उनमें खून के दौरे की वजह से हमको वह जगह लाल नजर आती है। इसवास्ते त्रिकुटी में लाली आती है क्योंकि मुझे अब यह यक़ीन हो गया है कि यह जो रूप मेरे अन्दर बनता है यह मेरा अपना ही बनाया हुआ है, आप समझते हो मेरा मतलब कि नहीं ? इसवास्ते अब मैं लाख कोशिश करूँ, अब मेरे अन्दर वह लाली नहीं आयेगी। मास्टर मोहन लाल बैठा हुआ है ? (नहीं आया)। अब मेरे अन्दर लाली नहीं आयेगी क्योंकि मुझे यह यकीन हो गया है कि जिस रूप का मैं ध्यान करता था यह मेरा अपना बनाया हुआ था। इसवास्ते जिनको सत्संग में यह ज्ञान हो जाता है, उनके लिए ये निचले दर्जे अभ्यास करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती है, बिलकुल ! मैंने रास्ता इतना साफ़ कर दिया है कि जिस के लिए मुसीबत उठाने का कोई ज़रूरत ही नहीं है। समझ गये पुरुषोत्तम दास ! क्या कहा मैंने ! इसी तरह से, अब इसमें से कैसे निकलते हैं वेद, ज्ञान ? जब हम किसी चीज़ से

या तत्त्व को देखना चाहते हैं तो हम हाते हैं, एक जिस चीज़ को देखते व Research करते हैं एक वह होती है, एक हमारी लगन होती है। ये तीन चीज़ें इकट्ठी होती हैं त्रिकुटी में। तो जो ज्ञान हमें हासिल करते हैं तभी होगा जब हम किसी चीज़ को देखकर के उसकी तरफ़ रागब (चलायमान) करते हैं। तो जितने इल्म हैं ये सारे, साईन्स इत्यादि, यह सब, Research इन्होंने कैसे को है कि यहाँ (मस्तक के बीच में) बैठ के यहाँ ध्यान करते थे। जिस चीज़ का ख्याल करते रहे उनको दिमाग अपने आप चलता रहा; कोई साईन्स में तरक्की कर गया, किसी ने एटम-बम्ब बना दिये, यह जितना खैहानी दुनिया का ज्ञान है यह सब त्रिकुटी की मंज़िल से निकलता है क्योंकि उसमें यकसूई हो जाती है। अब कहते हैं वहाँ बादल की गरज़ होती है। कोई ऊपर उसके बादल गरजता है ? नहीं ! बादल नहीं है। वह जिस तरह सूर्य समुद्र से पानी को खेंच लेता है और ऊपर जा के हवा बन जाती है, इसी तरह से जब हम दुनिया की इच्छाओं व कामनाओं को छोड़ कर सिर्फ परमार्थ के रंग में

ऊपर जाते हैं तो हमारी जो दुनिया की अर्थात् स्थूल पदार्थ की इच्छाएं हैं ये खत्म हो जाती हैं। मगर आइन्दा आगे जाने की इच्छा होती है तो हमारी वृत्तियाँ जो हैं ये इकट्ठी होती हैं। इकट्ठी होने से, ख्यालात जो हमारे इकट्ठे थे ये ऊपर जाकर के दिमाग के अन्दर इकट्ठे होके, आपस में रगड़ खाते हैं, वहाँ इनकी आवाज़ बम-बम या ओम्-ओम् निकलती है और यही मुक़ाम है। इसी मुक़ाम से तीन चीज़ें पैदा होती हैं: ख्याल पैदा होता है, ठहरता है, फिर खत्म हो जाता है—ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्हीं से सृष्टि की रचना होती है। तो जब हमारा मन यहाँ इकट्ठा हो जाता है यहाँ, उसको ओम कहते हैं, वह ओम् का बिन्दु (नुक़्ता) हो जाता है। उसको ज़ाहिर करने के लिए हमने नुक़्ता दे दिया मगर वास्तव में यह हमारा मन जो है यह वहाँ इकट्ठा हो जाता है, अकेला हो जाता है; ख्यालात छूट जाते हैं, उस वक़्त जो हमारी अवस्था होती है, वृत्तियाँ खिंची हुई होती हैं, वहाँ सारंग और रारंग की आवाज़ होती है। क्यों? जिस तरह सारंगी में आप तारें खींच लो, उसके ऊपर गज़ चलाओ तो

रंग, सारंग बजता है, ऐसे ही जब मन की वृत्तियां अभ्यास में इकट्ठा हो जाती हैं, उसके ऊपर सुरत चलती है वहाँ जो आवाज़ आती है उसको रारंग, सारंग कहते हैं ।

तो मेरे कहने का मतलब क्या है, कि हमारा मंज़िले मक़सूद क्या है ? हमारा मंज़िले मक़सूद है नाम की प्राप्ति जहाँ हमको कोई ग़म, फ़िक्र, चिन्ता वहम और भ्रम न रहे । यही है न गुरुइज़्म में ? :—

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।
चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित न व्यापे काल ।।

हमने नाम क्यों जपना ? ताकि हम इस दुनिया में रहते हुए हमारे को डर, फ़िक्र, चिन्ता, भ्रम वहम न आये, इस गरज़ के लिए हमने नाम जपना है । तो इसके हासिल करने के लिए मन की वृत्तियों को इकट्ठा करना है ताकि मन की वृत्तियों का तजुर्बा करने के बाद फिर आप मन को छोड़ जायें । अगर बात समझ में आ जाये तो इन निचले दर्जों के साधन करने की कोई जरूरत नहीं । सिर्फ़ अपने आप का

अपने अन्तर में मन को छोड़ कर आगे ले जाओ, कोई ज़रूरत इन साधनों की नहीं है। यही बात दाता दयाल ने काशीनाथ मुख्तार (गोरखपुर) को कही थी कि वक़्त आयेगा जब आइन्दा आने वाले सन्त यह अभ्यास का तरीक़ा सोहंग से शुरू करेंगे। जिस तरह राधास्वामी मत या कबीरमत ने यह बाकी षटचक्र छुड़ा दिये तो आइन्दा आने वाले सन्त जो हैं वह इस मन के चक्कर से भी छुड़ा देंगे। क्या ज़रूरत हैं इस मन के चक्कर में फँसने की !, मगर जिनको मन के आनन्द की ज़रूरत है, जो मन की इच्छाओं में फसे हुए है उनके लिए यह मन का साधन है। मगर जो अगर अपने घर जाना चाहते हैं उनको मन के चक्कर के साधन की कोई ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ अपने मन को छोड़ के साधो अपने आप में ठहरने की कोशिश करें। प्रकाश ही गुरु के चरण हैं और शब्द गुरु का रूप है। अगर यह हो जाय फिर क्या होगा ? सिर्फ़ अभ्यास करने से आपका काम नहीं बनेगा। अभ्यास के साथ किसी निर्बन्ध, वीतराग या मायातीत पुरुष की संगत की ज़रूरत है ताकि इस दुनिया का सारा भेद बताकर तुमको

वैराग्य दे दे ताकि तुम इस संसार के चक्कर से इच्छा न रखो। इसवास्ते यह सन्तमत जो है यह साधारण गृहस्थियों की चीज़ नहीं है। बिलकुल नहीं। यह तो खास-खास आदमियों के लिए है। खास-खास आदमी हैं जिनको अपने घर जाने की ज़रूरत है। जो दुनियादार हैं उनके लिए यह सन्तमत का नाम नहीं है। उनके लिए है वेदमार्ग—अपना ख्याल ठीक रखो, ध्यान बनाओ, रूप बनाओ, राम का बनाओ, कृष्ण का बनाओ, एक का बनाओ। जिस वक्त तुम्हारा मन इकट्ठा हो जायेगा तुमको दुनिया की सब चीज़ें अपने आप मिलती रहेंगी।

यह पहला दर्जा जो है इसमें अभ्यास करने वाले को अगर वह मूर्ति बना ले या ज्योति प्रकट कर ले उसकी दुनिया की जितनी वासनाएँ है, अपनी, वे पूरी होनी चाहिएँ और होती हैं। जो दुनिया चाहते हैं, संसार की उन्नति चाहते हैं, स्थूल माद्दे को हासिल करना चाहते हैं उनको पहले दर्जे पर अभ्यास करना चाहिए यहाँ (भ्रू-मध्य में), जहाँ मैंने उंगली रखी हुई है। यहाँ गुरु का रूप बना लो या सुमिरन

से मन का इकट्ठा करो और यह वासना रखो जो कुछ तुम चाहते हो, अगर ना मिले तो मैं ज़िम्मेवारी लेता हूँ। क्योंकि मैंने तजुर्बा किया है नां! बाहर जाता हूँ, लोग मेरे पास आते हैं वे कहते हैं बाबा जी! हमें यह चाहिए! अच्छा भई! तू ध्यान किया कर और माँगा कर, मिल जायेगा। जब फिर जाता हूँ, बाबा जी! मेरा काम हो गया। कई कहते हैं मेरा काम नहीं बना। मैंने कहा तेरा ध्यान बना कि नहीं बना? अरे भई! ध्यान तुम्हारा नहीं बना तो बाबा क्या करे। देखो! मैं तुमको धोखा नहीं दे रहा, अज्ञान में आके इन गुरुओं के आगे मत लुटो। हम गुरुओं ने हम लोगों को बिलकुल सच्ची बात नहीं बताई, अपना मान, अपने डेरे और अपनी दौलत के लिए हमको अपने जाल में फँसाया हुआ है। यह मैं दर्दे-दिल से कहता हूँ। मेरी जिन्दगी गुज़र गई सच्चाई की खोज में; तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे अपने विश्वास, अपने प्रेम और अपने यक़ीन का फल मिलता है; कोई बाहर का गुरु, कोई बाहर का महात्मा कोई कुछ नहीं देता! हाँ! वह अगर देता है तो तुम्हारे ख़याल को बदल देता है। ऐसो

बात कहता है जिससे तुमको विश्वास आ जाये, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हारा काम करना है। तुम लोग मेरी सेवा करते हो, नारायण दास, यह सब, मैं अगर यह सच्चाई नहीं बयान करता, यह सेवा तुमसे लेता हूँ यह तो खा जायेगी मेरी जान को! मैं आऊँगा कहाँ !! क्योंकि मैंने तमको धोखा दिया है !!! ज्ञानदाता की हैसियत से अगर तुम मेरी इज़्ज़त करते हो, मेरी सेवा करते हो, मैं उसको क़बूल (ग्रहण) करने के लिए तैयार हूँ। आग लगे गुरुआई को, मेरी चार दिन की ज़िन्दगी है, मैंने मर जाना है। जो इस वक़्त मैं खोटे कर्म करूंगा यह मैं भरूंगा। इन महात्माओं का क्या अंजाम होगा मुझे नहीं पता। क्या कहा मैंने !

तो अगर दुनिया चाहते हो तो यहाँ ध्यान किया करो। वह जो रूप तम बनाते हो उसको पूरा मानो; यह मत समझो फ़कीर चन्द है होशियारपुर का। उसको यह समझो कि यह पूरा है। जिस तरह मूर्त्ति है दाता दयाल की ! हम यह तो नहीं कहते यह पत्थर कि त्तीमू है !! तुम लोग मेरे पास आते हो, मैंने

प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता दयाल ने कहा था तालीम बदल जाना, मैं तालीम बदले जा रहा हूँ। क्या कह रहा हूँ ? ऐ इन्सान ! अपने अन्तर अगर दुनिया के कारोबार की तरक़्क़ी चाहता है, तो यह मुक़ाम जो सहस्रदल कमल का है यहाँ ध्यान किया कर। ज्योति का कर ले, गुरु स्वरूप का कर ले। तो जिस वासना को लेके तुम अभ्यास करोगे तुम्हारी वासना पूरी होगी ! होगी !! होगी !!! कोई रोक नहीं सकता क्योंकि यह Law of Nature (प्रकृति का नियम) है। दुनिया की चीज़ों के लिए यहाँ ध्यान करो। और यही गायत्री मन्त्र की Research करने वाले, जादू करने वाले करते हैं; ख़्याल की ताक़त है नां और तो कुछ नहीं ! और अगर समझ चाहते हो, कोई Research चाहते हो, ज्ञान चाहते हो, अनुभव चाहते हो तो त्रिकुटी (मस्तक के बीच) का मुक़ाम है। जिस चीज़ की ख़्वाहिश है उस ख़्याल को लेकर के यहाँ बैठ जाओ, उसी के ऊपर सुमिरन करते रहो तुम्हारी मदद होती रहेगी। अगर मस्ती चाहते हो, मस्ती जानते हो नां ? आनन्द चाहते हो जिस तरह शराब पी

होती है, तो सुन्न में अभ्यास करो, यह तुम्हारे अपने इख्तियार में है। मगर अगर तुम पार जाना चाहते हो यानि दुनिया के डर भय से बचना चाहते हो तो इन दर्जों पर अभ्यास करने से तुम नहीं बच सकते। फिर तुमको मन के इन तमाम ख्यालात को छोड़ना पड़ेगा, फिर मन से ऊपर जाना पड़ेगा अब मैं मन से ऊपर जाता हूँ क्योंकि मैं यह समझ गया कि यह दुनिया मेरी तो है नहीं ! मैं तो रहना नहीं !!

और सच पूछते हो, मैं इतना बकवास करता हू जब मुझको नाम भूल जाता है मैं गिर जाता हूँ ! गिर. जाता हूँ ! कल हमारे जौड़ा साहिब मेरे मकान पर गये, मैं गिर गया । तुम पूछो कैसे गिर गया ? इन्होंने कहा कि हमारे डाक्टर साहिब हैं यहाँ और एक लड़की है वहाँ, उसका address लिख दिया और साथ लिख दिया एक बोतल शैम्पू की दे दो। ईन अस्पताल वालों ने, ऐसे बेईमान हैं ये, इन्होंने मन्दिर के साथ बहुत बुरा सलूक किया है। तो उसने बात बताई, तो मुझे गुस्सा आया व अफ़सोस आया। बजह यचले आये ता मैंने सोचा [illegible]

बेहया ! तू गुस्सा किस वास्ते करता है ! वह तो जिसकी जैसी आदत है वह करेगा ! तुमको गुस्सा क्यों आया ? तो यह मेरी गिरावट है । जिस आदमी को नाम मिल जाता है वह न गुस्सा करता है और न उसको खुशी होती है और न वह रोता है, न वह पीटता है । । fall ! मैं कल गिर गया !! मुझे क्या ! जो करेगा भुगतना पड़ेगा । मैं आपको सच्ची बात कहता हूँ नारायण दास ! रात को मुझे ज्ञान हुआ अरे तू बकवास करता है। तुमको नाम मिला हुआ है ? अगर तुमको नाम मिला हुआ होता तो तुमको गुस्सा क्यों आता ?

तो नाम क्या चीज़ है ? नाम है अनुभव । यह तो संसार है ! रात को मैं अपने दिल में बहुत पछताया; मैंने कहा फ़क़ीर चन्द ! साधु बन गया ! लैक्चर देता है ! आप तो तू गिर गया !! तो नाम क्या हुआ ? सिर्फ़ शब्द सुनना नाम नहीं है ! अनुभव और ज्ञान नाम है !! जो शख़्स दोनों चीज़ें साथ रख कर चलता है वह इस रास्ते में कामयाब होता है । इस वास्ते बार-२ कहा जाता है, सत्संग और अभ्यास, दो चाजें :—

बिन सत्संग जो शब्द में पचते,
वह भी मूर्ख जान ।

तो आज शब्द था :—

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।
चरण का नित ध्यान सुमिरन,
चित न व्यापे काल ॥

गुरु है विवेक और नाम है शब्द । मगर अगर सिर्फ़ शब्द को सुनते रहोगे तुमको किसी कामिल का सत्संग नहीं मिला; देखो न ! रात को मुझे सत्संग मिल गया, जौड़ा साहिब ने मुझे बात बताई, मैंने क्या समझा ? यह दाता दयाल आ गये । यह गुरु ने आके मुझे चेतावनी दी कि तेरे अन्दर यह नुक़्स है तो मैंने अपने नुक़्स को दूर करने की कोशिश की । सन्तमत में आना महा कठिन है मगर इतनी बात मैं कहे देता हूँ कि आसान मैंने कर दिया—कुछ नहीं करना, सिर्फ़ अपने आपको विचार के साथ रहते हुए, दुनिया में ना फँसाओ । एक मालिक है ! एक रूप उसका मान लो । अपने आप को वहाँ समझो । समझ लो कि यहाँ तो हमने

रहना नहीं। मैं अब समझता हूँ! रात को मैंने अपने आप को बड़ी लानत (फिटकार) दी। इन्होंने बात कही मुझे ग़ुस्सा आ गया, मैंने कहा मैं सुबह उस डाक्टर की ख़बर लूंगा। फिर यह चले आये तो मैंने सोचा फ़क़ीर चन्द! तू नामधारी बना हुआ है, तू ने काहे को नाम लिया! तुम्हें क्यों ग़ुस्सा आया? तू समझता है मन्दिर तेरा है, तेरे बाप का मान्दर है? जिसने चोरी करनी है भड़वे ने, उसने चोरी करनी है, जिसने डाका मारना है उसने डाका मारना है, तू क्यों चिन्ता करता है! मैंने अपने आप को समझाया तब मुझे शान्ति मिल गई।

तो नाम क्या चीज़ है? नाम सिफ़ शब्द को सुनना हो नहीं है। शब्दयोग इसवास्ते किया जाता है कि हमारे मन के चित्त की वृत्तियाँ ये एकाग्र हो के किसी बात को समझने के क़ाबिल बन जायें। समझते हो पुरुषोत्तम दास! क्या कहा मैंने? अभ्यास इसलिए कराया जाता है कि हमारे चित्त की वृत्तियाँ, बे ठहर करके, हम किसी बात को समझने के योग्य हो जायें। जब तक सत्संग किसी

कामिल इन्सान का नहीं मिला हुआ, शब्दयोग भी कोई फायदा नहीं करता। अब मैं देखो नां! मैं कितना अभ्यासी था। रात को मैं गिर गया! क्यों गिर गया? मुझे गुरु ज्ञान भूल गया था कि मैं कौन हूँ, मैं तो फँस गया दुनिया में, मन्दिर में अपने आप को फँसा लिया कि मेरा मन्दिर है! तेरे बाप का मन्दिर है! मैंने रात को बड़ा अपने आप को Curse किया।

तो आप लोग आ जाते हैं, मैं तो ऊँचा चला गया, मेरा अपना कर्म भोग है। मैं अब तो चाहता हूँ दाता! यह शरीर चला जाये तो बेहतर है; कितनाक सिर खपाऊँ! आप पर कोई मेरा एहसान नहीं है; मेरे दिल में जज़बा था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा बता जाऊँगा। इस राधास्वामियों की वाणी ने, इन गुरुओं ने ऐसीयाँ वाणियाँ कह-कह करके हम गृहस्थियों को बेवकूफ़ और पागल बनाया हुआ है! मैं यह बेख़ौफ़ी (निडरता) से कहता हूँ; सच्ची बात कोई हमको बताता नहीं! गुरु के चरणों को धो-धो के मैं भी मर गया पीता, आप भी पी-पी

के मर गये ! गुरु के चरण प्रकाश हैं, नूर हैं। अपने अन्तर प्रकाश के साधन को पकड़ो तब गुरु के चरण पकड़ोगे। मगर यह हो नहीं सकता क्योंकि तुम्हारे मन में दुनिया की वासनाएँ हैं, क्रोध है, काम है, लालच हैं, लोभ है तो क्या फ़ायदा ! जो आदमी चारसौबीस, हेराफेरी करता है वह अब कहे कि मैं सत्तलोक चला जाऊँगा, उसका बाप भी नहीं जा सकता जो मर्ज़ी चाहे करे। आज शब्द था :—

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल।

मैं क्योंकि गुरु अपने आप को कहता हूँ, 'नामदान' यही मेरा नामदान है कि ऐ इन्सान ! अपने विचार से अपने आप को समझ ले तू कौन है। यह दुनिया तेरी नहीं है; तेरा घर ऊपर है। वह शब्द जो सार शब्द है उसको पकड़। इतना ही झगड़ा है और कुछ भी नहीं है :—

चरण का नित ध्यान सुमिरन,
चित न व्यापे काल।

किस चरण का ? प्रकाश का। गुरु के चरण प्रकाश हैं। प्रकाश को पकड़ो अगर पार जाना चाहते हो तो। और जब तक नहीं आता तो जिस गुरु से तुमने नाम लिया हुआ है उसका ध्यान करो, उसको मत समझो वह फ़कीर चन्द है या चरण सिंह है। वह जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है उसको समझो यह पूरा है, तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। अगर तुम यह समझते रहोगे कि तुम्हारे अन्दर जो गुरु आया यह बाबा चरण सिंह आया या फ़कीर चन्द आया तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा, दुनिया मिल जायेगी, तुमको यह ठीक है; दुनिया के काम बन जायेंगे मगर परमार्थ नहीं मिलेगा। यह है राज़ जो मैं बताना चाहता हूँ। किनके लिए ? जो चाहते हैं कि हमारा बेड़ा पार हो जाये, उनके लिए और जो नहीं चाहते उनके लिए कोई ज़रूरत नहीं :—

सर्व समरथ सर्व अंग संग, सर्व जगत आधार।

अब देखो ! बाहर के गुरु की अगर यह स्तुति होती ! तो क्या वह हर वक़्त तुम्हारे साथ रहता है ? तुमने मुझे गुरु कर लिया फ़र्ज़ करो, क्या मैं

तुम्हारे साथ चौबीस घण्टे रहूंगा ? वह कहते हैं 'सर्व समरथ', 'सर्व अंग संग' वह अंग संग रहने वाला कौन है ?

ऐ दिवानो ! ऐ मेरे फ़कीर चन्द मन ! तू भी पागल रहा सारी ज़िन्दगी ! वह ताक़त है, वह हर वक़्त तुम्हारे पास रहती है और वह है प्रकाश की ताकत और वह है शब्द की ताक़त, तुम्हारे अन्दर रहती है :—

सर्व समरथ सर्व अंग संग सर्व जगत् आधार ।

आह ! अब फ़कीर चन्द जगत आधार हो सकता है ? सोचो मेरी बात को ! हो सकता है तो मुझे बताओ !! वह एक ताक़त है, उसके रूप को समझ कर तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा :—

शुद्ध मन से पद कमल को करूँ निसदिन प्यार ।

अपने मन को साफ़ रख के, अपने अन्तर में झांक के देखो मालिक, सत्तगुरु तुम्हारे अन्तर रहता है ! बाहर नही रहता !! अपने आप को सच्चा बना करके उसके आगे उससे प्यार किया करो,

तुम्हारा काम हो जायेगा, दुनिया भी बन जायेगी, दीन भी बन जायेगा। करना तुमने अपने आप है, किसी बाहर के गुरु ने नहीं करना :—

सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार।
विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊँ किनार॥

मन का समुद्र जो है, मन के ख्यालात जो हैं तरह-२ के उठते रहते हैं। अब मैंने बोला कि न बोला कि रात को जौड़ा साहिब ने मुझे कहा कि यह हुआ अस्पताल में, तो मुझे गुस्सा आ गया। तो मैं कहाँ फँस गया? अपने मन के समुद्र में फँसा कि नहीं फँसा? सारे ही फँसते हैं। मैं कई दफ़ा कहा करता हूँ मैं गिर जाता हूं, यह है मेरा गिरना। कब गिरता हूँ? जब मुझे गुरु ज्ञान नहीं रहता; जब मुझे समझ नहीं रहती। यह भूल जाता हूँ कि मैं हूँ कौन? तब मैं फँसता हूँ। मैं क्या! बड़े-बड़े फँसते हैं। मगर जो फँस के, अपने आप का समझता है मैंने ग़लती खाई है उसका तो उद्धार हो सकता है मगर जो फँसता है और फिर अपनी ग़लती को भी नहीं महसूस करता उसका उद्धार नहीं होता :—

चलते चलते जो गिरे, ताहे न लागे दौस ।
जो घर से ही न चले, ता सिर करड़े कोस ।।

ग़लतियाँ सब खाते हैं। कोई इन्सान ऐसा नहीं जिसमें ग़लती नहीं है, बुरी, भली सब। जो आदमी अपने आप को बचाना चाहता है वह हमेशा अपने मन की हालत को Watch किया करे। रात को सोते हो, सारा दिन तुमने क्या कुछ किया ? जहाँ-जहाँ तुमने ग़लतियाँ खाई हैं उनको फिर दोबारा न करने की कोशिश करो, ज़िन्दगी बन जायेगी :—

दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरन लगाय ।
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय ।।

तो बाहर के गुरु की क्या ड्यूटी है ? जो मैं कर रहा हूँ। कि ऐ इन्सान ! असली गुरु शब्द स्वरूप है, उसके चरण प्रकाश हैं। अपने अन्तर चल। जो कुछ तुमको मिलना है, तुम्हारे अन्तर से मिलना है। आप लोग आ जाते हैं, मैं तो अपने कर्मों का मारा हुआ हूँ (गला भर आया, आवाज़ भारी हो गई) सच्ची

बात आपसे कहता हूँ। मैं न यह कर्म करता, प्रण करता, तो न मैं इस चीज़ में फँसता। मैं सुखी नहीं हूँ इस काम से। मन्दिर बना बैठा, अब यहाँ के कर्मचारी हैं, ये डाकू हैं! चोर हैं! दवाइयें बेचते हैं, डाक्टर हो या कोई भी हो! मैंने क्या लिया? मुसीबत अपनी जान में ले ली! किया क्या मैंने? मगर यह मेरा कर्म था।

आप लोग आ जाते हैं, जो कुछ मैंने ज़िन्दगी में समझा आपको बता दिया। नाम क्या है? गुरु का हुक्म। जो गुरु हुक्म देता है वही इन्सान के लिए नाम है, उसके ऊपर चलो।

मैं नहीं कहता मैं गुरु हूँ। जहाँ-जहाँ तुम जिस गुरु को मानते हो उसी गुरु को मानो। मैंने तो गुरुमत को समझा है, सच्चे दिल से! और सच्चे दिल से यह चाहता हूँ दाता! आपने काम दिया था, मैं फँस गया हुआ हूँ। मुझे क्या पता था कि मुझे ऐसे आदमियों से वास्ता पड़ेगा जो क्या करते हैं यहाँ मन्दिर में! मन्दिर को बदनाम करते हैं। तो आज मैंनेआप लोगों को बहुत कुछ कह दिया। मैं दुखी:

हूँ, अपने मन से। इनसे नहीं! अपने मन से दुःखी हूँ कि भई! तूने क्या लेना है फ़कीर चन्द? चार दिन की ज़िन्दगी है मन्दिर रुढ़ जाये, तैनूँ को! मगर रात को मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैंने महसूस किया कि मेरी ग़लती थी।

तो आप लोग आ जाते हैं, आपको आज मैंने बता दिया कि नाम क्या है और कैसे मिलता है :—

नाम रहे चौथे पद माहीं।

वह तुम्हारी अपनी ही ज़ात है, प्रकाश और शब्द का भण्डार है। यह निचले दर्ज़े जो हैं, अगर दुनिया का मज़ा (आनन्द) लेना चाहते हो, मन का, तो निचले दर्ज़ों का साधन किया करो और अगर बिलकुल पार आना चाहते हो तो मन का छोड़ के ऊपर चले जाओ। दोनों ही बातें हैं। आरती कर दो! पुरुषोत्तम दास! मर जाना है, हुण तैयार हो ा! जमैं भी तैयार हूँ!!

सत्संग परम सन्त परम दयाल पण्डित
फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

तिथि 11-8-74

काल चक्कर

मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।
मंगलम् अव्यक्त अनुपम, मंगलम् भव गंजनम् ।।
मंगलम् धुरपद निवासो, मंगलम् सत् आसनम् ।
मंगलम् निर्वाण सद्गति, मंगलम् जन रञ्नम् ।।
मंगलम् ज्ञान स्वरूपम्, मंगलम् आनन्द रूप ।
मंगलम् चैतन्य सदनम्, मंगलम् सत सत्य भूप ।।
मंगलम् योगीन्द्र माया, तीत मंगल दायकम् ।
मंगलम् संसार सारम्, अद्भुत मुनि नायकम् ।।
मंगलम् त्रय गुण रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम् ।
मंगलम् त्रय काल ज्ञाता, मंगलम् भव नाशनम् ।।
आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त जो ।
मंगलम् करुणा सदन, शुभ तत्त्व परम जगत प्रभो ।।
आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।
शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखित उबारने ।।

गुरु की यह ऊपर के शब्द में लिखी सिफ़तें हैं। अपनी आत्मा से पूछता हूँ ओ बेहया फ़कीर चन्द, तूने दुनिया में आकर क्या किया ! क्या यह सफ़ात तुम में हैं ? भव-सागर से पार कराने के वास्ते कोई आता है तो तू क्या कर सकता है ? यह एक सवाल है जो सच्चाई पसन्द इन्सान के नाते से अपने आप को पूछता हूँ। काश ! मैं पूरा तो नहीं बना, मगर आप सत्संगियों की बदौलत दाता दयाल की दया की वजह से मैं इस गुरु के स्वरूप को या गुरु मूर्त्ति क्या होती है, इसको किसी हद तक समझ गया हूँ। वह जो समझ मुझको मिली है अभी तो उसने मुझे बहुत कुछ शान्ति दी। उसी के आधार पर मैं यह काम करता हूँ क्योंकि दाता ने कहा था तालीम को बदल जाना।

इस दुनिया में कौन आदमी है जो बाह्य प्रभावों से प्रभावित नहीं होता ? सभी होते हैं, कोई बेटे के मरने पर प्रभावित हुआ, कोई मुल्क की तबाही पर प्रभावित हुआ, कोई कोई और मुसीबत आने पर प्रभावित हुआ। मैं इस संसार में आया, भिन्न-भिन्न

संस्कारों से प्रभावित हुआ और अशान्त हुआ। क़ुदरत मौज मुझको दाता दयाल के चरणों में ले गई। आज मैं दुःखी हूँ, अफ़सोस करता हूँ कि मैंने उनकी इज्ज़त वह नहीं की जो मुझे करनी चाहिए थी; मेरा तो काल मत के अनुसार उनसे प्रेम था। इस शब्द में लिखा हुआ है :—

आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने।
शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखित उबारने॥

वह आके करना क्या है? इन्सान के जीवन को दुःखों से बचाने के लिए शब्दयोग बताता है। मैं पापी हूँ, गन्दा हूँ, मुझ में हज़ारों ऐब हैं मगर मैं सच्चाई पसन्द इन्सान हूँ। यह दुनिया जिसको हम देखते हैं, जिसमें रहते हैं, यह है क्या? दाता का शब्द है :—

काल चक्र का सहज हिंडोला, झूला अचरज न्यारा।
सब कोई झूले झूला चढ़कर, काल झुलावन हारा॥
चन्द्र, सूर दोऊ गगन में झूलें, झूलें नौ लख तारे।
जीव जन्तु पृथ्वी में झूलें, नर पशु सकल बिचारे॥

यह दुनिया क्या है ? काल का चक्कर है। झूला कहते हैं पींघ को। यहाँ हर वक़्त हर एक चीज़ हरक़त में है। सूर्य चलता है, चाँद चलता है, हम चलते हैं, हमारा मन चलता है, हमारी आत्मा हर वक़्त चलायमान है, सब संसार, यह चलता रहता है :—

राजा झूला रानी झूली, और प्रजा समुदाई ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूलें, झूली सब दुनियाई ।।

तमाम संसार चक्कर में है या कि नहीं है ? तो इस चक्कर को समझ के किसी के भी मरने का कोई अफ़सोस नहीं आता, न शोक ही होता है। बाज़े वक़्त जब अपनी असलियत को भूल जाता हूँ तो अपने स्वार्थ के लिए ख़्याल आ जाता है, किसी वक़्त आ जाता है ! मैं निकल गया, मगर यह है ज्ञान। वह जो सतगुरु दुनिया में आता है, जिसकी तारीफ़ आपने सुनी है वह जीवों को क्या करता है ? वह जीवों को इस दुनिया का रूप बताता है कि यह दुनिया है क्या, यह संसार है क्या ? यह सारा काल का चक्कर है। तुम देखो नां ! क्या चक्कर हो रहा है; कहीं लड़ाइयाँ होती हैं, हाती हैं कि नहीं होतीं ? यह है क्या ?

यह है काल चक्कर। इसको न किसी ने रोका, न कोई रोक सकता है। सन्तों ने आवाज़ तो बुलन्द कर दी कि काल है, काल है, मगर काल है तो क्या काल को रोक लिया? कह भी देते हैं सन्त, निर्दयी है जी, यह ज़ालिम है, तो निर्दयी और ज़ालिम कहने से काल अपना काम तो नहीं छोड़ता! तुम उसको निर्दयी कह लो, ज़ालिम कह लो, समझते हो मेरा मतलब कि नहीं! बुरा कह लो मगर क्या तुम्हारे या सन्तों के बुरा कहने से यह अपना कर्म छोड़ देगा? यह एक सवाल है मेरे दिल में। तो सन्त क्या करते हैं? जो मैंने समझा, प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा, वह इस संसार का रूप बता देते हैं जीव को जो इस काल चक्कर में आकर हाय-हाय करता है, रोता है, पीटता है, मरता है, यह करता है, वह करता है, उसको यह समझाते हैं :—

लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानो ।
देवा झूले देवो झूले, जल थल अग्नी पानो ।।

सब ही हरकत में हैं। झूलने के मायने? झूला झूलते हैं, हरकत ही होती है, कभी इधर, कभी

उधर, कभी इधर, कभी उधर, तो यह सब चीज़ ऐसे चक्कर में आई हुई है :—

काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे ।
वह भी बचा न चक्र से अपने, झूला झूले सारे ।।

जिसने यह दुनिया बनाई है वह ताक़त ! तुम इस ताक़त को नहीं समझ सकते । बैटरी में एक इलैक्ट्रिक मोटर फ़ोर्स होती है जो वोल्टेज से नापी जाती है, वह कुटिस्थ होती है । उसमें से जो करंट निकलती है, सर्कट में काम करती है उस करंट का नाम काल है, तो वह भी वक़्त पर आके ख़त्म हो जाता है । करंट बैटरी से निकली, पंखे चलाये, बल्ब जगाये, सब कुछ चलाया, फिर मुड़ के फिर बैटरी में । वह कहते हैं यह भी सब संसार जब से सृष्टि बनी है ऐसे ही उपजता रहता है और चलता रहता है :—

चढ़ीं पेंग सब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे ।
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछड़ के होगये न्यारे ।।

तुम अब आये हुए हो, चालीस, पचास, सौ आदमी बैठा हुआ है, घण्टे के बाद आप भी बिछुड़

जायेगे, चले जायेंगे, यह दुनिया का हाल है। मेला होता है, कुम्भ पर लाखों आदमी इकट्ठे होते हैं, फिर बिछुड़ जाते हैं। परिवार में कोई बाप बनता है, कोई बेटा, चाचा, ताया बनता है, कुछ दिनों चैन उड़ाते हैं, फिर बिखर जाते हैं :—

एक दशा नित जो बरते, कोई नज़र न आया ।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, ऋषि मुनि बचन न पाया ।।

वह जो गुरु है, जो इस संसार में आता है, वह जीवों को क्या बताता है ? भई ! यह तो दुनिया ऐसी ही है, कोई भी एकरस एक अवस्था में कभी कोई रह नहीं सकता; सब ही चक्कर में आये हुए हैं :—

पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलासा ।
बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निवासा ।।

तुम देखो ! समुद्र से भाप निकलती है, पहाड़ों तक जाती है, बर्फ़ बनती है। बर्फ़ घुल के फिर पानी बनता है, पानी बह के फिर नीचे समुद्र में जाता है :—

नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा ।
हम तो देखें खुलो दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा ।।

यह उस गुरु का कलाम है जिसने यह शब्द सुनाया था कि गुरु किसका नाम है, वह जीवों को कैसे उभारता है, कैसे उनको इस काल के चक्कर से जो दुःख और सुख उठाते हैं, जो हम घबराहट चैन, आनन्द, खुशी लेते हैं इससे वह कैसे बचाता है ? यही है नां कि वह गुरु स्वरूप में आया, उसने क्या किया ? जीवों को इस चक्कर के दुःख और सुख से जो हम उठाते हैं इससे बचाया, इसके अतिरिक्त वह इस चक्कर को और कुछ बदल नहीं सकता ! क्या कहा मैंने ! कबीर साहिब आये, राधास्वामी दयाल आये, दुनिया को बदल गये ? वह इस दुनिया का रूप दिखाकर जीव को इस दुनिया के दुःखों, सुखों का जो असर उसके दिमाग पर पड़ता है उससे उसको बचा देता है । वह कैसे बचाता है, बताता हूँ आगे :—

लकड़ी जलकर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी ।
माटी माटी में नहीं ठहरो, बनी काठ और लाठी ।।

लकड़ी कोयला हो जाती है, राख हो जाती है। हम इसको ज़मीन में फेंक देते है, वहाँ फिर एक वृक्ष पैदा हो जाता है।—

विष्टा अन्न अन्न भय विष्टा, सोई सब कोई खाबे।
यह प्रपंच है अद्‌भुत न्यारा, कोई बिरला लख पावे ।।

हम गन्दगी उठा के मैल डालते हैं नां, गन्दमन्द सब डाल देते हैं खेतों में, वही उस मैल की दूसरी शक्ल, उस का असर अनाज में जाता है, वही हम खाते हैं। तो दाता फ़रमावे हैं, यह ऐसा प्रपंच है कोई कोई आदमी इस प्रपंच को समझता है :—

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी वैसी।
वह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी ।।

जागते हैं तो चक्कर में हैं, स्वप्न में है तो चक्कर में, सो जाते हैं, फिर जागते हैं, फिर स्वप्न में जाते हैं यह चक्कर चलता रहता है; यह काल बली की रचना है, यह दुनिया ऐसे ही बनाई है :—

पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी।
कभी जड़ मिलजुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी।।

यह सारा संसार एक चक्कर है, मैं कई बार सोचता हूँ, यह चक्कर है इसको कौन महसूस करता है ? मैं कहा करता हूँ, मेरा अनुभव यह कहता है कि हमारे अन्तर कोई ऐसी चीज़ है जो सब की साक्षी है। मेरे अन्दर कोई चीज़ है जो आँखों के द्वारा तुमको देख रही है। मेरे अन्तर कोई चीज़ है, किसी बात को बुद्धि के द्वारा समझ रही है। मेरे अन्तर कोई चोज़ है जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है; वह खुद न शब्द है और न प्रकाश है। वह जो चोज़ है, वह है वह मालिक की अंश; वह है धुर-पद से आई हुई। तो जब वह यहाँ इस चक्कर में आई हुई दुःखी हो जाती है तो वह जो मालिक है, उसकी धार गुरु के रूप में आतो है। वह इस चीज़ को समझकर इस चक्कर से निकालने के लिए आती है। चक्कर तो जैसा है तैसा ही रहता है; चक्कर जो जैसा है वह

चलेगा ! न किसी ने इसको रोका और न रोक सकता है। लोक-लोकान्तर बनते रहते हैं। तो वह इन्सान के अन्दर जो चीज़ है जिसको मैंने अभी बयान किया, कहता रहता हूँ. वह दुःखी होती है। इसको सन्त कहते हैं सुरत। जब वह दुःखी हो जाती है, पुकार करती है, फिर वह जो ताक़त है, ज़ात जिसको बोलते हैं. अकाल पुरुष, अनामी कह लो, जिसका कोई नाम नहीं, अल्ला कह दो, वह फिर इन्सानी रूप में आकर के उसको चिता के उसको इस चक्कर से निकलने को तजवीज़ (उपाय) बताती है और वह बताने से पहले उसको उस चक्कर का रूप बताती है; संसार का रूप बताती है। तो यह दोनों रूप बता रहे हैं :-

समुझत बने कथन नहिं आवे, मन बानी अलसानी।
कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी॥
एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा।
कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा॥
झूले की है बिचित्र कहानी, कथा वार्ता न्यारी।
नर को हम समुझावन आये, सुने न बात हमारी॥

दीवानो ! दुनिया गुरुमत को नहीं समझती। दुनिया यह समझती है कि गुरु की सेवा करने से तुम्हारा पुत्र नहीं मरेगा, तुम्हारा भाई नहीं मरेगा, तुम बीमार नहीं होगे। तुम यह नहीं होगे; अरे ! गुरु महात्मा तो आप बीमार हुए। यह जो कुछ तुमको मिलता है यह तुम्हारे अपने इस काल चक्कर के हिसाब से मिलता है। काल की दुनिया का और क़ानून है और इससे बचने का और क़ानून है। काल की दुनिया में रचने के लिए हमारा कर्म है, हमारा ख़्याल है, हमारे मन के विचार हैं, हमारे मन की आशाएँ हैं। तो जो-२ कर्म किये हुए हैं उनका फल सबको भुगतना पड़ता है। बाबा सावन सिंह जी का क्या हाल हुआ, तुलसी दास जी का क्या हाल हुआ, कल को मेरा क्या हाल हो ! समझते हो नां ! दुनिया ने गुरुमत को समझा नहीं और समझने वालों का भी कोई क़सूर नहीं, गुरुओं ने समझाया नहीं। गुरुओं ने तो गुरुआई की अपने डेरे के लिए, अपने मानवता मन्दिर के लिए, अपने लालच के लिए, अपने मान के लिए, अपनी इज्ज़त के लिए; सच्चाई तो हमें बयान नहीं की :—

दु:ख सुख दु:ख सुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया।
द्वन्द भाव ले जगत रचाया, द्वन्द के फाँस फँसाया ॥

यह दु:ख सुख जो कुछ है, यह काल की सृष्टि में, दोपने में आते रहते हैं। इस संसार में यह मुरक्कब रचना है; मुरक्कब ! मुफ़रद रचना नहीं है। जो सन्त आते हैं यह जीव को मुरक्कब रचना से निकाल कर, मुफ़रद रचना में जाने के लिए ख़्याल देते हैं :—

मन बुद्धी और चित्त हंकारा, सो झूले की रसरा।
दोलड़ तीलड़, चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी ॥

वह जो हमारी सुरत यहाँ आई हुई है उसको इस काल के चक्कर के हालात ने बांधा हुआ है। मन, बुद्धि, चित्त ,अहंकार हमारे अन्दर पैदा हुआ हुआ है, उस से हम दु:ख, सुख, हाय, मेरा तेरा सब करते रहते हैं :—

जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिल्लाये।
शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन विधि नहिं पाये ॥

हम क्या करते हैं ? रोते ही है ना ! कोई

नुक़सान हो जाता है रोते हैं, पीटते हैं, इस माया के चक्कर में फँसे हुए है। इससे बचने की तरकीब नहीं नज़र आती :—

तब 'दयाल' को दाया लागी, संत रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुक़ामी; शालिग्राम कहाया॥

वह कहते हैं तब दयाल को, वह जो ताक़त है जो असल में हमारे अन्तर सब को देखती है, उसका जो आधार है, उसको दया आई, वह सन्त रूप में आया; वह उनके अपने गुरु शालिग्राम जी के रूप में आया। क्या चिताया ? :—

नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चेताया।
जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया॥

जीवों को चिताया अर्थात् समझाया, राज़ बताया - भेद बताया कि असलियत क्या है; यह दुनिया क्या है ? यह काल की रचना है, माया की रचना है, यहाँ हर वक़्त ऐसा होता रहता है, कोई चीज़ एक हालत में नहीं रहती, यह चिताया और जिसने उनके चिताने को समझा उसको अपने साथ लगा लिया :—

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में, गुरु होय जीव चिताय ।
जिन-२ माना बचन समझ के, तिन को संग लगाय ।।

जिन्होंने बचन को नहीं समझा ! सत्संग में होता क्या है ? तुम लोग तो सत्संग इतना ही समझते हो कि गाओ, बजाओ, ढोलक खड़काओ । दुनिया गुरु के पास जाती है, गुरु को हो जफ़ा मयारती है, जो गुरु कहता है उसको कोई नहीं सुनता ।हो कारण कि सत्संगियों को शान्ति नहीं मिलती, भटकते फिरते हैं । इसवास्ते गुरु के वचन को समझना और सोचना चाहिए :—

सुन फ़कीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सुनाऊँ ।
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊँ ।।

वह क्या बात थी जो वह कहना चाहते थे ? कह तो दिया उन्होंने मगर उस पर अमल नहीं होता था । अब इस उमर में अमल होना शुरू हो गया । क्यों ? क्योंकि मैं तो फँसा हुआ था मन के चक्कर में; गुरु के रूप के साथ ही सारी ज़िन्दगी प्यार करता रहा । नहीं समझ आती है ! मुझे समझ नहीं आती थी, यह समझ देने के लिए मुझे गुरुआई दी

थी ! अब तुम लोगों की दया से बात मेरी समझ में आ गई कि जो कुछ मैं अपने अन्तर नज़ारे देखता हूँ ये थे क्या ? यह काल और माया का चक्कर है, असली चीज़ नहीं है। हम इसी में फँसे रहे, मैं काफ़ी मुद्दत इसमें फँसा रहा। अब भी फँसा रहता हूँ मगर समझ आ गई मुझे। दाता कहते हैं :—

खेल खेलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ ।
काल हिंडोले से तू बाचे, बिधि विचित्र समझाऊँ ।।

वह मुझे कहते है तुझे खेल खिलाता हूँ। मैं दुःखी होके गया था नां ! मैंने उनसे बहुत प्रेम किया है, वह मेरे प्रेम की क़दर करते थे मगर राज़ मेरी समझ में नहीं आता था। तो वह मुझे कहते हैं कि खेल खिलाता हूँ तुमको; यह खेल ही है नां जो कराया है। यह जो कुछ मुझ से कराया है यह क्या था ? खेल नहीं तो क्या था ? अब पता लगा खेल ही था। कहते हैं विधि अर्थात् तरकीब बताता हूँ। क्या तरकीब ? :-

कर सत्सग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधू बनकर साध लें युक्ती, जा झूले के पारी ।।

कहते हैं सत्संग समझ-बूझ के साथ कर। समझ-

बूझ तो मेरा बाप नहीं जानता था; मैंने तो धन्ने भक्त वाला जफ्फा मारा हुआ था, जिस तरह धन्ने भक्त ने पत्थर को जफ्फा मारा, नामदेव ने मूर्त्ति को जफ्फा मारा, ऐसे मैंने मारा हुआ था। तो मुझे कहते हैं सत्संग समझ-बूझ के साथ कर। यह समझ-बूझ देने के लिए मुझे यह सारा काम दिया था। जो समझ में नहीं आता था अब मैं समझता हूँ। इसलिए मैं इस उमर में आप लोगों को अपना सच्चा सत्तगुरु मानता हूँ। दया तो दाता दयाल की है मगर आप लोगों की बदौलत मेरी आँख खुल गई :—

साधू बनकर साध ले युक्ती, जा झूले के पारी ॥

युक्ति क्या है ? :—

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत संगत में आया।
तेरा दाँव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया ॥

यह माया नहीं तजी जाती थी। जब से मुझे आप लोगों के तजुर्बों से मन-माया के रूप का निश्चयात्मक ज्ञान हुआ तो मैं इस माया को तजने के लिए मत्रबूर हो गया। तो जब यह माया तज जाता हूँ तो फिर आगे क्या रह जाता है ? मेरा

अपना रूप जो असल में मैं हूँ। जब तक शरीर में हूँ वह है शब्द। रात को मैं इसी शब्द में था, अब भी इसी शब्द में हूँ। उस शब्द में क्या होता है? मुझे संसार भूला रहता है, संसार नहीं भासता। एक तो यह दुनिया नहीं भासती, एक शरीर नहीं भासता, एक मन के नज़ारे नहीं सामने आते; एक अवस्था छा जाती है जहाँ दुख है न सुख है, न चिन्ता है न फ़िक्र है। वह क्या है? यह वह समझ सकता है जो साधन करता है। इसीवास्ते :—

यह करनी का भेद है, नाहिं बुद्धि विचार।
कथनी छोड़ करनी करे, तो पावे कुछ सार॥

यह करनी का मज़मून है। करनी क्या करनी है? हम लोग तो मूरतें बनाते रहते हैं (मैं भी बनाता रहा हूँ) बातें करते रहते हैं। इन सब को छोड़ देना और अपने अन्तर केवल शब्द को पकड़ना यही करनी है और करनी कोई नहीं। यह करनी आसान भी है और मुश्किल भी है। बात समझ में आ जाये तो आसान, ना आये तो मुश्किल से मुश्किल। मेरे लिए भी यह मुश्किल थी। सन्त जीवों

को इस संसार के चक्कर से निकालने के लिए यह बताते हैं, भई, नाम को पकड़ बेवकूफ़ ! यह दुनिया नाम को सिर्फ़, मुँह से जो हम पाँच नाम जपते हैं या राम-राम जपते या राधास्वामी मुँह से कहते हैं; दुनिया सब इसको नाम कहती है, यह नाम नहीं है। यह तो क ख ग घ है :—

नाम रहे चौथे पद माहीं,
यह ढूँढें त्रिलोकी माहीं।

नाम वह शब्द है जो हम सब कुछ (तन, मन, रूप-रंग) भूल करके जो बाक़ी शब्द रहता है वह है नाम। हम लड़ते हैं, कोई कहता है यह पाँच नाम है, कोई कहता है राधास्वामी, राम या अल्लाहू नाम है, यह सब क ख ग घ हैं बच्चों की बातें हैं। मगर जो इस श्रेणी के हैं उनके लिए ऐसा ही चाहिए। तुम शुरू में मन को इक्ठ्ठा करना चाहते हो, जिस नाम से करो, जो तुम्हारे गुरु ने बता दिया; पाँच नाम के सुमिरन से करो, राधास्वामी से करो, वाहेगुरु से करो, अल्लाहू से करो, यह सब झगड़े हैं; नाम वहाँ रहता है। तो दाता मुझको फरमाते हैं :—

अब की चूके मौज न ऐसी, त्याग काल की आसा।

उस वक़्त का मुझे यह वर दिया हुआ है, सन् 1921 के शब्द हैं यह। उस वक़्त तो मैं चूका हुआ था, अब इस बुढ़ापे में मैं उस चूक को छेड़ गया; बात मेरी समझ में आ गई। चूँकि मेरा कर्म भोग था दाता ने कहा था तालीम को बदल जाना मैं खेंचा जाता हूँ। इसको बोलते हैं कर्म का चक्कर! मैं चलता हूँ, इसलिए काम करता हूँ वरना मुझे तो इस काम करने में भी अब कुछ Taste नहीं है, Interest नहीं है। नहीं समझ में आती है। गले पड़ा ढोल बजाता हूँ। वह कहते हैं "अब के चूके" दाता! मैं बड़ा गन्दा आदमी हूँ! आपने बड़ी दया की, सच्च कहते हैं सन्त पापियों के लिए ही आया करते हैं। जो नेक हैं उनके लिए सन्तों का क्या फ़ायदा हम तो पापी आदमी हैं! अब भी गन्दे हैं, अपनी कमजोरियों को जानते हैं। हमारा शरीर, हमारा मन यह जो कुछ करता है, यह जिस क़िस्म के ग्रह, जिस क़िस्म की प्रकृति से हमारा शरीर बना है, जिस क़िस्म के हमारे माँ-बाप के ख़्यालात थे, उनका असर रहता है। मेरे पर भी रहता है! मैं भी तो सिपाही का लड़का हूँ!! सिपाही की

ज़िन्दगी आप देख लो, पवित्र ज्यादा नहीं हो सकती है ! नहीं समझ में आती है ! तो वह जो माँ-बाप का संस्कार मेरे शरीर में आया हुआ है वह मुझे भी किसी वक़्त गिराता है। सच्ची बात कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता ! गिराता है !! मगर मैं समझ जाता हूँ :—

आज का साधन आजहि करले, कल को होगा उदासा ॥

अगर इस ज़िन्दगी में तुम वहाँ नहीं पहुँचे तो यह भूल जाओ कि मरने के बाद तुम वहाँ जाओगे बस, यह मेरा तजुर्वा है। जिसने इस ज़िन्दगी में इस अवस्था को प्राप्त नहीं किया वह जब मरेगा वह उम्मीद न रखे कि मैं मरने के बाद उस अवस्था को हासिल करूँगा। यह सब दुनिया में एक पाखण्ड का जाल है "नाम ले लो, अन्त समय में सत्तगुरु तुमको सत्तलोक पहुँचा देगा"। जो इस ज़िन्दगी में ही सत्तलोक नहीं पहुँचा, मरने के बाद कौन पहुँचायेगा उसको, न कोई पहुँचा सकता है।

इस ज़िन्दगी में जो इस काल और माया के चक्कर के भ्रम को छोड़ के अपने रूप को नहीं

पहुँचा, ज़िन्दगी में उसने नहीं किया, मर गया तो फिर वह वहाँ कैसे जायेगा ? हो नहीं सकता। मैं सोचता हूँ इस मंज़िल तक पहुँचने के लिए जीवों को क्या करना चाहिए ? किसी अतीत पुरुष, वीतराग पुरुष की संगत में जाओ, उससे प्रेम करो। उसकी निष्काम सेवा करो। तो रोज़-रोज़ का रगड़ा खाते रहने से रोज़-रोज़ की बचन की धार जो दिमाग़ पर पड़ती रहती है, उसके सुनते रहने से; किसी न किसी दिन हो सकता है कि तुम्हारा दिमाग़ बात को समझ जाये। सबसे बड़ा ईलाज यह है। यही पतंजलि के योग शास्त्र में भी लिखा हुआ है कि कोई ज्यादा उपाय नहीं है तो किसी बीतराग, मायातीत पुरुष की संगत में रहो। उसके बचन सुनो, उसके दर्शन करो, उससे प्रेम करो, मगर निस्स्वार्थ होकर के। जो ग़रज़ के लिए जाते हैं उनकी बुद्धियां भृष्ठ रहती हैं। निष्काम, बेग़रज़ सेवा करो

अब रह गयी दुनिया, कई दफ़ा सोचता हूँ, मेरे तजुर्बे में आया है कि प्रारब्ध कर्मों के अनुसार

जो कुछ किसी को मिलना होता है, वह मिल जाता है। दुनिया में काम करो, अपनी ड्यूटी समझ के पूरा करो। अगर तुम अपना काम करते रहोगे क़ुदरत तुम्हारी मदद अपने आप करती रहेगी; इसमें हाय-हाय मत करो !

गुरु वही है जो इन्सान के भ्रम अर्थात् काल कर्म के चक्कर की फाँसी काट दे। दूनिया ने उसको गुरु माना हुआ है जिसका बड़ा भारो डेरा है, जिसके बहुत से चेले हैं। यही बात है नां, और तो कुछ नहीं ! यह बात नहीं है :—

जग में जोव रहें बहुतेरे, पर फ़कीर कोई एका।
सिहों के नहीं लेहंड़े, हंसों की नहीं पाँति।
लालों को नहीं बोरियाँ, सन्त न चलें जमात ॥

शेर झुण्डों में नहीं चलते, लालों की बोरियाँ नहीं होती, इक्का दुक्का ही लाल होता है। ऐसे हो सन्तों की जमात नहीं चलती; सन्त के साथ जमात नहीं होती है। मेरी कोई जमात है बताओ ? किसी को चेला ही नहीं बनाया; पोछ नहीं लगाया; काम कर चला गुरु का।

रात को ख्याल आया कि काल के चक्कर से बचने का कोई तरीका है ? सत्संग, वह भो किसी

बीतराग पुरुष का। वाणी भी जो पढ़नी चाहिए, किसी सन्त की पढ़नी चाहिए। आजकल तो तुकबाज़ा है, जो भी उठता है चार पद्य लिख देता है :—

साखी लाई बनायकर, इत उत अक्षर काट।
कहें कबीर वह कब लग जीयें, जूठी पत्तल चाट॥

दो लफ़्ज किसी के लिए, दो लफ़्ज किसी के लिए, दो लफ़्ज किसी के लिए वह पद्य बना देते हैं।

तो आप लोग आ जाते हैं, मैं सोचता हूँ मैं आप पर क्या दया करूँ, लोग कहते जो हैं "गुरु की दया चाहिए"! यह तो मैंने तुमको बता दिया कि गुरु की दया, मौत आई हुई है उससे नहीं बचा सकती, जो तुमने कर्म किये हैं उसका तुमको भोग भोगना पड़ेगा। गुरु की दया यही है कि वह तुम्हारी बुद्धि को साफ़ कर देता है; तुम्हारे मन का निश्चयात्मक बना देता है; अगर वह यक़ीन तुमको आ जाये तो तुम मुसीबत में रहते हुए भी, दुःखों को सहते हुए भी, अपनी आत्मा को शांति में रख सकते हो। बस इतनी ही बात है और कुछ नहीं। यही सन्तमत मेरी समझ में आया, अगर कोई और सन्तमत है तो मुझ को इसका पता नहीं।

सब को राधास्वामी।

अन्तिम चेतावनी

बावजूद दो सूचनाओं के अभी तक बहुत थोड़े मानव मन्दिर पढ़ने वाले सत्संगियों ने पत्रिका पढ़ने के लिए अपना नाम, पता और ग्राहक नं: भेजा है, इसलिए अन्तिम चेतावनी दी जाती है कि जिस सत्संगी का नाम, पता और 'मानव मन्दिर' को जारी रखने की प्रार्थना 31 अगस्त, 1983 तक नहीं पहुँचेगी उसे 'मानव मन्दिर' पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।

—सम्पादक

शोक समाचार

सब सत्संगियों को अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री के. सी. ग्रोवर, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का 2 जुलाई, 1983 को देहान्त हो गया है। वे परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज के परम भक्त थे। उनके इस अकस्मात् निधन पर मानवता मन्दिर के सभी लोग हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनके पारिवारिक जनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

मनुष्य का स्वरूप और चमत्कारी घटनाएँ

लेखक :

परम सन्त हजूर मानव दयाल डा० ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज

फ़कीर बाबा ने 'मनुष्य बनो' का नारा लगाकर, मानवता धर्म का प्रचार करने के लिए होशियारपुर (पंजाब) में मानवता मन्दिर की स्थापना की। इस मानवता के धर्म की समझने की बहुत ही जरूरत है। मनुष्य जाति आज तरह-तरह के मतमतान्तरों और धर्मों में बँटी हुई है। इसका कारण है कि तथाकथित घटनाओं के घटने पर, मनुष्य उन घटनाओं के सच्चे रूप को नहीं समझता। वह समझता है कि चमत्कार किसी बाहरी ताकत के कारण ही घट रहे हैं। वह इस बात को नहीं जानता कि उसके अपने मन में कितनी ताक़त है। मनुष्य का मन ब्रह्माण्ड के मन का छोटा नमूना है। उसमें चमत्कारी घटनाएँ पैदा करने की ताक़त है। वह ऐसे-ऐसे रूप अपने विचारों से पैदा कर सकता है जो आश्चर्यजनक होते हैं और हर प्रकार से उसकी सहायता करते हैं। उसकी उलझी हुई समस्याओं को सुलझाते हैं, बीमारियों को दूर करते हैं और दुर्घटनाओं से बचाते हैं और उसे समाधि के ऊंचे स्तरों पर भी ले जाते

हर मनुष्य में ऐसी शक्ति या ताक़त मौजूद है, किन्तु अज्ञान के कारण वह अपनी इस ताकत के बारे में जानता नहीं है। इसी अज्ञान के कारण ही मनुष्य इतने धर्मों और मतमतान्तरों में बँट गया है। यदि उसे इस बात का ज्ञान हो जाये कि चमत्कारी घटनाओं का कारण बाहर की कोई ताकत न होकर उसका अपना ही मन है, तो वह अपने से बाहर किसी दूसरी शक्ति को वरदान नहीं मानेगा।

पानी पर चलना, दो-चार रोटियों से हज़ारों लोगों की भूख मिटाना और ईश्वर के नाम से रोगियों की बीमारियों को दूर करना ऐसी अजीबो-गरीब घटनाएँ नहीं, जिन्हें ईश्वर की ताकत का प्रदर्शन कहा जाए। ऐसी घटनाएँ तो मनुष्य के अपने ही मन की ताक़त के कारण घटित होती हैं और मनुष्य का मन विश्वव्यापी सूक्ष्म मन से सम्बन्धित है।

फकीर बाबा ने मनुष्य के मन की ताक़त को माना है। किन्तु साथ ही साथ मनुष्य के ऊँचे स्तर की भी व्याख्या की है, जिस पर उसे अत्यात्मिक अनुभव होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य की शक्ति केवल मन तक ही सीमित नहीं। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है, किन्तु अज्ञान के कारण वह सदा अपने आपको अपूर्ण समझता है। वह सोचता है कि पूर्णता कहीं बाहर से आती है और इसी कारण ही वह सदा किसी बाहरी चीज का ही सहारा ढूंढ़ता रहता है। वह ईश्वर के किसी खास रूप को या किसी पैगम्बर या अवतार को ही ईश्वर मान लेता है। वह इस सहारे पर इतना निर्भर हो जाता है कि वह केवल

उसकी ही पूजा करता है, उसी को ही परम सत्ता मान लेता है। वह अपने उस सहारे की पूजा के लिए अनेक कर्मकाण्ड करता है और अपने आपको अजीब-अजीब उसूलों में बाँध लेता है। वह इतना कट्टर बन जाता है कि दूसरे धर्मों व मतों की दलीलें भी नहीं सुनना चाहता। वह सच्चे रास्ते से भटक जाता है। वह ईश्वर के सच्चे रूप को भूलकर उसके गुरु रूप को पहचान कर इधर-उधर भटकता रहता है। दाता दयाल फ़कीर को कहा करते थे—

"फ़कीर गुरु तो तेरे पास,
तेरे मन में, तेरे तन में, तेरे स्वासों स्वास।
गुरु नहीं काशी; गुरु नहीं मथुरा, गुरु नहीं विच कैला,
ढूँढ़ इसे अपने हृदय में, वहाँ है गुरु का बास।"

इस बात का ज्ञान न होने के कारण कि गुरु तो हमेशा मन में रहता है, मनुष्य जाति अनेक धर्मों में बँट गई है और इसी गुटबन्दी के कारण ही सारे संसार में नफ़रत और संघर्ष का बोलबाला है।

भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों ने अपने-अपने धर्मगुरुओं के असली रूप को न पहचान कर, अज्ञान के कारण उनको अलग-अलग ईश्वर मान लिया है। यदि ऐसे व्यक्तियों को मनुष्य के असली रूप का ज्ञान हो जाए तो वे अपने-अपने गुरुओं की पूजा करने और अलग-अलग मतमतान्तरों में बँट जाने की जगह अपने गुरुओं के आदर्श जीवन का अनुसरण करेंगे। असल में धार्मिक बनने का मतलब है सच्चा मनुष्य बनना। फ़कीर बाबा ने जिस

मानवता धर्म का नारा लगाया है, वह सभी धर्मों में भाईचारा ला सकता है और यही मानवता धर्म मनुष्य को उसके परम लक्ष्य, परम धाम की ओर भी ले जा सकता है।

फ़कीर बाबा बार-बार कहते हैं कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है और उस पूर्णता को पाने का पहला क़दम है कि वह सच्चा मनुष्य बने। वेद तथा उपनिषद् भी मनुष्य को पूर्ण मानते हैं। उनमें यह लिखा है कि ब्रह्माण्ड में मनुष्य ही सबसे ऊँची सत्ता है। ईशोपनिषद् के आरम्भ में यह लिखा है:—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

अर्थात् वह परम सत्ता, ईश्वर, ब्रह्म या राधास्वामी आदि अपने आप में पूर्ण हैं। यह मनुष्य उस पूर्ण आधार से पैदा हुआ है, इसलिए वह भी अपने-आप में पूर्ण है। जब मनुष्य अपने आपको पहचान लेता है, तो उसे परम सत्ता का भी ज्ञान हो जाता है। फ़कीर बाबा कहते हैं, "मालिक के असली रूप को पहचानो, मालिक तो तुम्हारे अन्दर है। वह शब्द और प्रकाश का आधार है, वह सारे ब्रह्माण्ड का आधार है। वह अकाल पुरुष है। वह देह, मन और प्रकाश से परे है।"

सारा संसार मन के चक्कर में ही फँसा हुआ है। जो कुछ मन कहता है, हम वही करते हैं। अच्छाई भी मन करता है और बुराई भी मन। योगी, जती तथा संन्यासी भी मन के चक्कर में फँसे रहते हैं। फ़कीर बाबा के शब्दों में :—

मन ही ज्ञान है, मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष ओरभोग।
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग ॥
मन के अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही है रोग।
मन गोबिन्द मन गोरख रूपा, मन हो है वियोग।
मन ही पानी, मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग।
मन ही गुरु मन ही चेला, मन ही ब्रह्मा संयोग।
मन ही का व्यवहार जगत् में, नाहिं जानें यह लोग ॥

जब तक मनुष्य मन के सच्चे रूप को पहचान नहीं लेता, तब तक उसे न तो सांसारिक सुख मिल सकता है और न ही वह मोक्ष की ओर ही बढ़ सकता है। यही कारण है कि फ़कीर बाबा ने मानवता के धर्म को सबसे ऊँचा बताया है।

मनुष्य का असली रूप, जिसे फकीर बाबा मनुष्य की उत्पत्ति कहते हैं, प्रकाश से सम्बन्ध रखता है। यह वही प्रकाश है, जो परम सत्ता के धाम सतलोक से निकलता है। उन्होंने यह बताया है कि विज्ञान का सत्य, वेदों-उपनिषदों का सत्य और सन्तों द्वारा अनुभव किया गया सत्य एक ही है। वह कहते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति को चाहे सनातन धर्म, चाहे विज्ञान, चाहे सन्तमत किसी भी दृष्टि से क्यों न देखा जाए, एक ही परम आधार से हुई है। वह कहते हैं :—

"मैं आधुनिक युग का मनुष्य हूँ। विज्ञान कहता है कि जीवन का विकास जल से हुआ है। जल में छोटा-सा

जन्तु अमीबा वनस्पति में विकसित हुआ, उसके बाद पशु, पक्षियों आदि का विकास हुआ। पशुओं के विकास में वानर सबसे ऊँचा माना गया है और यह कहा गया है कि मनुष्य का रूप वानर से ही विकसित हुआ है। हिन्दू धर्मग्रन्थ इस बात से सहमत हैं कि जीवन की उत्पत्ति जल से हुई। हिन्दू धर्म के मुताबिक ईश्वर के चौबीस अवतार हुए हैं। पहला अवतार मच्छ का हुआ, उसके बाद कच्छ, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र और कृष्ण आदि के अवतार हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू ग्रन्थों में यकीनन जल को ही जीवन की उत्पत्ति का कारण माना गया है, क्योंकि सबसे पहले अवतार मच्छ की उत्पत्ति पानी में ही हुई।

मैं इस प्रश्न पर कई बार विचार करता हूँ कि जल में जीवन कहाँ से आया ? जल का कारण वायु है, वायु का स्रोत अग्नि है, अग्नि आकाश से पैदा होती है और आकाश का आधार शब्द है। जल में प्रकाश और शब्द के गुण हैं। इस प्रकार जल धीरे-धीरे जीवन के अनेक स्तरों से गुजर कर मनुष्य के रूप में विकसित हुआ है। वही प्रकाश हमारे अन्दर निवास करता है। अब सवाल उठता है कि यह प्रकाश कहाँ से आया ? यह प्रकाश सतलोक से आया है। सतलोक ही प्रकाश का परम स्रोत है। उसी परमधाम से ही उस प्रकाश की किरणें निकलती हैं, जो मनुष्य में, पशुओं में, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं देवी-देवताओं में मौजूद है।"*

---

*फ़कीर संदेश, होशियारपुर, पृ० ९-१०।

इस प्रकार मनुष्य की उत्पत्ति को प्रकाश से और जीवन के विकास को जल से मानकर फकीर बाबा इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मनुष्य परम सत्ता एवं उस सतलोक से आया है, जो कि प्रकाश का अनन्त समुद्र है। इसलिए ही मनुष्य अपने अनन्त धाम को वापिस जा सकता है।

फकीर बाबा का कहना है कि ईश्वर के तीन मुख्य लक्षण हैं : स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण। उसका स्थूल लक्षण उसकी स्थूल सृष्टि की रचना, उसका सूक्ष्म लक्षण उसकी सर्वज्ञता और उसका कारणता का लक्षण उसकी सर्व-व्यापकता है। मनुष्य में भी ईश्वर के ये तीनों लक्षण मौजूद हैं। हालांकि ईश्वर इन तीनों लक्षणों के होते हुए भी इन सबसे परे है, फिर भी यदि कोई मनुष्य ईश्वर को देखना चाहे, तो उसे ईश्वर के इन तीनों लक्षणों को अपने आप में देखना चाहिए। उसमें ईश्वर का स्थूल रूप मनुष्य का वीर्य है, जिससे वह सन्तान पैदा करता है। ईश्वर का सूक्ष्म रूप मनुष्य के अपने विचार या इच्छा में है और ईश्वर का कारणात्मक रूप वह प्रकाश है, जो सारे विश्व को और मनुष्य के अन्दर की पोषक शक्ति है।

फकीर बाबा ने स्वयं भगवान राम और भगवान कृष्ण के दर्शन किये, किन्तु फिर भी ऐसे-ऐसे चमत्कारी अनुभवों से पूरी तरह से सन्तुष्ट नहीं हुए। इस बात का पूरा ब्योरा आगे दिया जायेगा। यहाँ पर तो मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि बाबा ने सच्चे ईश्वर के ज्ञान को कैसे प्राप्त किया। मनुष्य के मन की ताकत की कोई सीमा नहीं है और इस मन ही की ताकत के कारण लोग बड़े-बड़े चमत्कार या करिश्मों का अनुभव करते हैं। अब यह यहाँ सवाल उठता है कि मन को यह ताकत मिलती

कहाँ से है ? इसका उत्तर सीधा-सादा है। मनुष्य के मन को ताक़त देने वाला है विश्वव्यापी या सारे विश्व में फैला हुआ मन, जिसे सहस्रदल कमल कहा गया है, यह विश्वव्यापी मन देश, काल और कारण के जगत में अपना काम कर रहा है। इसे काल भी कहा जाता है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में इसे काल पुरुष कहा गया है। देश, काल और कारच इस जगत् के तीन पहलू हैं। सच्चा ईश्वर तो इन तीनों से भी परे है। कोई भी गुरु या धार्मिक नेता, जो इस सच्चाई को अपने चेलों से छुपाता है, वह सच्चा गुरु नहीं हो सकता। यह मुमकिन है कि ऐसे गुरु को ईश्वर के सच्चे रूप का ख़ुद को भी अनुभव नहीं हुआ हो। फ़कीर बाबा ऐसे गुरुओं की निन्दा नहीं करते। वह तो कहते हैं कि किसी भी मत या धर्म पर चलने वाले व्यक्ति, जो राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, जिहोवा या जीज़स क्राईस्ट या मोहम्मद आदि के रूपों को देखते हैं, उनका यह अनुभव उनके अपने-अपने ख़ास रूप में ख़ास लगाव या पक्के विश्वास के कारण ही होता है।

फ़कीर बाबा अपने अनुभव के आधार पर बताते हैं कि मनुष्य का सच्चा रूप क्या है, ईश्वर क्या है और मनुष्य का ईश्वर से क्या सम्बन्ध है ? अनेक ऋषियों, विचारकों तथा वैज्ञानिकों ने इन सवालों पर बहुत विचार किया है और आखिर में इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मनुष्य ईश्वर का ही रूप है। वेदों में लिखा है कि जो पिण्ड यानि कि छोटी से छोटी चीज़ में मौजूद है वह ब्रह्माण्ड में भी मौजूद है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि वेदों में यह बताया गया है कि मनुष्य पूर्ण ब्रह्म से पैदा होने के कारण खुद भी पूर्ण है। यहूदियों

और ईसा मसीह के धर्म में भी इस बात को माना गया है। सभी धर्मों में जिन-जिन चमत्कारी घटनाओं का जब-जब भी वर्णन किया गया है, वे सभी प्रकाश से ही सम्बन्ध रखती हैं। लोगों ने जहाँ-जहाँ भी फकीर बाबा के रूप को प्रकट होते देखा है, उन सबका कहना है कि उन्होंने बाबा के रूप को प्रकाश से निकलते हुए देखा। अब सवाल उठता है कि क्या यह प्रकाश फ़कीर बाबा के कारण शरीर से ही पैदा होता है? उसका जवाब यहाँ नहीं दिया जा सकता। जो कुछ ऊपर कहा गया है उस सबका मतलब यह है कि प्रकाश के आधार पर ही चमत्कारों की सही व्याख्या दी जा सकती है।

वे लोग जो केवल चमत्कारों से ही मोहित हो जाते हैं, वे सच्चे ईश्वर को नहीं पहचानते। वे ईश्वर के किसी खास रूप के ही पुजारी होते हैं। वे इस खास रूप में इतना अन्धविश्वास रखने लगते हैं कि उस रूप के अलावा उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगता। वे दूसरे रूपों तथा मतों की निन्दा करते हैं। ऐसे लोग अन्धेरे में हैं। फ़कीर बाबा ने जीवन-भर ईश्वर के सच्चे रूप को जानने की खोज की है और पूरी सच्चाई से अपने अनुभव को खोल कर लोगों के सामने रख दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि आप लोगों के लिए अन्धविश्वास, चमत्कार, रूढ़िवाद और कर्मकाण्ड आदि के चक्कर से बाहर निकलना बहुत कठिन होता है। मनुष्य का मन हमेशा उसकी इच्छा या विचारों का ताना-बाना बुनकर, उसी नमूने के

मुताबिक ही अपनी जिन्दगी चलाता है। इसलिए ठीक ही कहा गया है, "जैसी करनी वैसी भरनी, जैसा विचार वेसा विकास।" अतः मनुष्य में ईश्वर का सूक्ष्म रूप इच्छा या विचार ही है।

फकीर बाबा कहते हैं कि एक बार बनारस से एक सज्जन उनके पास आया और बोला, "मैं ईश्वर को देखना चाहता हूँ।" बाबा ने उसे कहा कि ईश्वर को सर्व-शक्तिमान कहते हैं और वह सारी सृष्टि को पैदा करता है। सब लोग सदा यही कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के अन्दर है। इसलिए ईश्वर का स्थूल रूप मनुष्य का अपना वीर्य ही है। जिस प्रकार ईश्वर अपनी शक्ति से विश्व की सृष्टि करता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य अपने वीर्य से सन्तान पैदा करता है। जो मनुष्य अपने वीर्य को बेकार ही नष्ट करते हैं, वे ईश्वर का एक प्रकार से अपमान करते हैं और इसी कारण उनकी वृत्ति भी वैर भाव, हिंसा आदि की ही जागती है। आप ईश्वर की पूजा किसी भी रूप में क्यों न करो यदि आप अपने ईश्वर के स्थूल रूप अपने वीर्य की रक्षा नहीं करते तो यकीन मानिये कि आपको कभी भी सुख और शान्ति नहीं मिलेगी। जिस ईश्वर की आप पूजा करते हो, वह आपको दुःखों से बचाने के लिए नहीं आयेगा। ईश्वर के स्थूल रूप की सच्ची पूजा है अपने वीर्य की रक्षा करना और केवल सन्तान पैदा करने के लिए ही उसका प्रयोग करना।

मनुष्य के अन्दर ईश्वर का सूक्ष्म रूप है उसकी विचार शक्ति, इसलिए विचार को सदा शुद्ध रखो। ईश्वर का तीसरा रूप है प्रकाश। प्रकाश के बिना कोई भी चीज़ इस पृथ्वी पर टिक नहीं सकती। प्रकाश सब चीज़ों के अन्दर ईश्वर का कारणात्मक रूप है। अतः हम कह सकते हैं कि ईश्वर सब प्राणियों में तीन रूपों में रहता है। उसका पहला रूप है मनुष्य का वीर्य, दूसरा रूप है मन या विचार और तीसरा रूप है प्रकाश। अब आप खुद ही बताओ कि ईश्वर का सच्चा पुजारी कौन हो सकता है? सच्चा पुजारी वह नहीं जो केवल अन्धविश्वास के कारण ही मन्दिर मसजिद, चर्च या गुरुद्वारे में जाता है, घंटियाँ बजाता है, गीत गाता है। सच्चा पुजारी असल में वह है जो ईश्वर रूपी वीर्य को बरबाद नहीं करता, जिसके विचार शुद्ध हैं और जो अपने अन्दर के प्रकाश में मस्त रहता है। सनातन धर्म की संध्या की प्रार्थना में भी यही सत्य बताया गया है। किन्तु दुःख की बात यह है कि आजकल सनातन धर्म केवल रीति-रिवाज़ों और मन्त्रों के पढ़ने तक ही सीमित रह गया है। कोई व्यक्ति गायत्री मन्त्र के सही मतलब को समझता ही नहीं और उस मन्त्र में बताये हुए प्रकाश को अपने अन्दर देखने की कोशिश नहीं करता। मनुष्य अपने अन्दर के प्रकाश को तभी देख सकता है, जब वह ब्रह्मचर्य का पालन करे और सदा शुभ विचार रखे। सदा सुखी तथा प्रसन्न रहने के लिए मनुष्य को चाहिए

कि वह अपने अन्दर रहने वाले ईश्वर के स्थूल, सूक्ष्म और कारण—तीनों रूपों को समझे और उनका अनुभव करे।"*

इससे यह स्पष्ट है कि सनातन धर्म में भी, उसी सत्य को बताया गया है, जिसे सन्तमत मानता है। फ़कीर बाबा ने जो ये बातें बताई हैं उन पर ख़ास ध्यान देना चाहिए। मनुष्य मन के चक्कर और चमत्कारों के जाल से तब तक ऊपर नहीं उठ सकता जब तक कि वह फ़कीर बाबा के इस व्यावहारिक उपदेश को अपने जीवन में नहीं उतारता। संसार के सुख और रूहानियत दोनों अंग मनुष्य के अपने अन्दर ही मौजूद हैं। वह बेकार ही इनको बाहर ढूंढ़ने के लिए भटकता रहता है। उसको अपनी पूर्णता का ज्ञान तभी हो सकता है, जब वह पूर्ण गुरु सत् पुरुष का सत्संग करे और उसे अपना इष्ट मानकर उसके उपदेशों पर चले। उसकी छुपी पूर्णता उसे धीरे-धीरे चमत्कारों के मानसिक स्तर से ऊपर उठा प्रकाश तक ले जा सकती है और बाद में उसे परम धाम की ओर भी ले जा सकती है।

लेकिन पूर्णता के रास्ते में बड़े-बड़े ऐसे प्रलोभन सामने आते हैं, जो मनुष्य को चमत्कारों के स्तर के आगे

---

*The Art of Living by Faquir Baba, पृष्ठ ४४-४५।

नहीं बढ़ने देते। फ़कीर बाबा ने यह चेतावनी ठीक ही दी है कि इन चमत्कारों के स्तर को ईश्वरानुभूति का परम स्तर कभी नहीं समझना चाहिए। चमत्कारों का अस्तित्व है, उन्हें झूठा नहीं कहा जा सकता लेकिन चमत्कार ही सब कुछ हैं यह कहना भी ठीक नहीं। फ़कीर बाबा उस सन्त-मत का प्रचार करते हैं जो ईश्वर और मनुष्य दोनों के सच्चे रूप को पहचानने एवं सत्य का धर्म है। मनुष्य असली रूप में ईश्वर का ही सच्चा रूप है, किन्तु उसका मन काल का मानसिक स्तर है, जिसे माया कहा गया है। यही मन हमें देश, काल और कारणता की सीमाओं से मुक्त भी कर सकता है और जन्म-मरण के बन्धन में भी डाल सकता है। फ़कीर बाबा कहते हैं कि इस मन के स्तर से ऊपर उठकर हम अपने सच्चे रूप को पहचान सकते हैं। उसका एक ही तरीक़ा है, वह है कि हम हर तरीके से सच्चे मनुष्य बनें। सच्चा मनुष्य बनने पर ही भिन्न-भिन्न धर्मों में फैली हुई ग़लतफहमियों को दूर किया जा सकता है। सच्चे मनुष्य ही धर्मों में आपस में सहयोग लाकर धर्म के नाम पर जो बँटवारा हुआ है और रोज़ हो रहा है, उसे रोक सकते हैं। आज भी इस दुनिया में धर्म की कट्टरता के कारण जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं, उसका एक ही इलाज है, मानवता धर्म को अपनाना। फ़कीर बाबा का "मनुष्य बनो" का धर्म सब धर्मों की इज्ज़त करता हुआ भी सब धर्मों और मतमतान्तरों से परे है। ऐसा मानवता का सच्चा धर्म ही हम सब को सच्चे ईश्वर की ओर ले जा सकता है।

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो !

राधास्वामी । परम दयाल जी सहाई ।

मैं आज ही विदेशी दौरे से होशियारपुर पहुँचा हूँ और अब सब को इस महीने की सद्भावना भेज रहा हूँ । इसमें कोई शक नहीं कि मेरा यह दौरा दो दृष्टियों से सफल रहा है । ये दो दृष्टियाँ मेरे निजी कार्य और परम दयाल जी की आज्ञा का पालन करने से सम्बन्ध रखती हैं । दूसरे शब्दों में मेरा इस बार अमेरिका और योरुप जाना घरेलू काम और सत्संग देने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हो था । इसलिए मैं तीन महीनों के दौरान में सिर्फ़ डेढ़ महीना ही जगह-जगह पर सत्संग दे सका । अमेरिका और कैनेडा में सत्संगियों के प्रेम का अनुभव हुआ । अमेरिका के सत्संगों में से FLORIDA (फ्लोरीडा) MARILAND (मैरीलैंड) WISCONSIN विसकोनसिन) और वर्जीनिया के सत्संग बहुत ही अच्छे रहे । सत्संगियों को याद होगा कि परम दयाल जी को हर बार वर्जीनिया बीच में A.R.E. (Association for Research & Enlightenment) में बुलाया जाता था और अमेरिका और दूसरे देशों से आये हुए A. R. E. के सदस्य परम दयाल जी के अंग्रेज़ी में दिये गये सत्संगों से लाभ उठाते थे । इस बार उस

संस्था के वर्तमान प्रधान स्वर्गीय श्री ह्यूलैंड केसी के सुपुत्र डा० चार्ल्स थामस केसी ने परम दयाल जी के चोला छोडने के बाद मुझे उन्हीं के उत्तराधिकारी के नाते 26 जून 1983 के दिन एक विशेष सत्संग आयोजित करके सम्मानित किया। उन्होंने इस सत्संग की सूचना पहले से ही प्रकाशित कर दी थी। इसके फलस्वरूप बहुत से श्रोतागण दूर-दूर से इस सत्संग को सुनने के लिए आये। डा० चार्ल्स थामस केसी ने इसी उपलक्ष्य में कुछ चुने हुए व्यक्तियों के साथ मुझे और भाग्य जी को अपने घर प्रीतिभोज दिया। इस अवसर पर डा० विलियम गोडन हार्ईजर, उनकी पत्नी श्रीमती नैंसी और फ्लोरीडा (FLORIDA) से Miss Gloria Albritton भी हमारे साथ थे। सत्संग बहुत ही सफल रहा और दूसरे दिन मैं डा० चार्ल्स थामस केसी को उनके दफ्तर में मिला। हमारी इस मुलाकात में यह तय हुआ कि A.R.E. और मानवता मन्दिर की संस्थाएँ विश्व में धार्मिक सत्यता और मानव प्रेम का प्रचार करने में सहयोग देंगी। इसी सिलसिले में 'मानव मन्दिर' और परमदयाल जी का साहित्य A.R.E. में भेजा जायेगा और A. R. E. का साहित्य मानवता मन्दिर में उपलब्ध होगा। मानवता मन्दिर और A. R E. के उद्देश्य समान हैं। इन दोनों संस्थाओं के परस्पर सहयोग से धर्म की सच्ची तालीम को मानव मात्र की भलाई के लिए विश्व के सभी देशों में फैलाया जा सकता है।

इस दौरे की सफलताओं में से A.R E. से सहयोग की वार्ता बहुत ही सफल रही है। इंग्लैंड में लंडन बरमिंघम, वैस्ट ब्रौमविच और गान्धी हाल मांचैस्टर में सत्संग बहुत

ही सफल रहे। मांचैस्टर की गान्धी हाल की संस्था के हजारों इंग्लैंड में रहने वाले भारतीय सदस्य हैं। उन्होंने यह आग्रह किया है कि भविष्य में मैं उनकी संस्था के लिए अधिक समय दूँ। इसी तरह से A R E. ने भी अगले वर्ष अपनी संस्था में मेरा एक सप्ताह का प्रोग्राम रखा है। यह सब कुछ कहने का उद्देश्य यह है कि परम दयाल जी महाराज की असीम कृपा से उनका सत्यता धर्म को विश्व में फैलाने का मकसद अपने आप ही पूरा होने जा रहा है। इस महान् कार्य में भारत के सभी सत्संगियों और होशियारपुर के मानवता मन्दिर के सत्संगियों, कार्यकर्त्ताओं और ट्रस्टियों का बड़ा सहयोग रहा है। परम दयाल जी के प्रिय प्रिंसिपल श्री एस. एन. भारद्वाज ने मेरी अनुपस्थिति में सत्संग देने का कर्त्तव्य बहुत ही सुचारु रूप से निभाया। श्री एस. एन. भारद्वाज कई वर्षों तक फ़कीर लाइब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट के प्रधान रहे हैं और अब भी उसी ट्रस्ट के वरिष्ठ सदस्य हैं। परम दयाल जी की अनुपस्थिति में भी प्रिंसिपल भारद्वाज जी सत्संग दिया करते थे और लेख लिखा करते थे। हमें इस बात का गर्व है कि भारद्वाज जी मानवता मन्दिर की रूहानियत की दृष्टि से सेवा कर रहे हैं। भविष्य में भी श्री भारद्वाज जी मेरी अनुपस्थिति में यह शुभ कार्य करते रहेंगे। इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

मानवता मन्दिर विश्व भर में सच्चाई, रूहानियत और शान्ति का केन्द्र है, इसमें कोई शक नहीं। 'मानव-मन्दिर' पत्रिका सच्ची मानवता और सच्ची रूहानियत को सत्संगियों तक पहुँचाती है। पिछले महीने के सन्देश में मैंने संक्षेप रूप में गुरु और शिष्य के लक्षण बता कर

यह बतलाने की कोशिश की थी कि अभयदान या नाम दान ही सबसे ऊँचा दान है। नाम दान का बहुत ही गहरा मतलब है। बहुत लोग समझते हैं कि गुरु मन्त्र की फूंक मार कर शिष्य को नाम दान देता है लेकिन यह विचार सही नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि गुरु से नाम लेकर सुमिरन, ध्यान और भजन के द्वारा शिष्य उस मंजिल पर पहुँच सकता है जहाँ पर वह सुख-दुःख, लाभ-हानि और जन्म-मरण से भी ऊपर उठ जाता है। नाम की यह हालत ही राधास्वामी हालत कहलाती है। इस हालत पर पहुँचने के लिए एक सच्चा गुरु अलग-अलग व्यक्तियों को उनके स्वभाव के मुताबिक रास्ता बतलाता है। इसलिए नाम दान में कई दर्जे होते हैं। इन्हीं दर्जों से गुज़र कर ही सत्संगी या भक्त आखिरी मंजिल पर पहुँच सकता है। नाम दान के चार दर्जों को बतलाते हुए स्वामी जी महाराज ने लिखा है :—

एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निज धाम॥

यहाँ पर जन्म शब्द का मतलब एक पूरा जीवन नहीं है। यहाँ पर एक जन्म का मतलब कुछ समय है। यह वक़्त कई महीनों का या वर्षों का हो सकता है। जब तक सबसे पहले भक्त या जिज्ञासु गुरु से प्रेम नहीं करता उसको सच्चा ज्ञान नहीं मिल सकता। इस गुरुभक्ति की पूरी व्याख्या तो किसी और स्थान पर की जायेगी। यहाँ पर इतना कहना ज़रूरी है कि सत्संगी गुरु पर ध्यान इसलिए लगाता है और उसकी भक्ति इसलिए करता है कि वह

अपनी वृत्ति को बाहर से हटा कर गुरु पर लगा दे। दूसरे शब्दों में वह बहिर्मुखी हालत से हट कर गुरुमुखी हालत में आ जाये। इस तरह काफी वर्षों तक गुरु भक्ति करने के बाद ही गुरु अपनी दया से उसको वह नाम या गुरु मन्त्र देगा जिसका सुमिरन करने से सत्सगी धीरे-धीरे अन्तर्मुखी होने लगेगा। काफी समय तक सुमिरन, ध्यान और भजन से अन्तर्मुखी होने के बाद ही इसी जीवन में भक्त उस हालत का अनुभव करता है जिसे जीवन्मुक्त अवस्था कहा जाता है। अगर किसी सत्संगी ने जीते जी इस जीवन्मुक्त अवस्था को हासिल नहीं किया वह मरने के बाद सत्तलोक नहीं पहुँच सकता। उसे मरते समय गुरु का कोई रूप सत्तलोक नहीं ले जा सकता। इस हालत में अभ्यास को जारी रखता हुआ सत्संगी आख़िर में शब्दगति से भी ऊपर चला जाता है और उसे उस सच्चाई का पता लग जाता है जो अलख और अगम से भी परे है। वह अपने आपे में ठहर जाता है। इसी आख़िरी मंजिल को परम धाम या निज धाम कहा गया है। नाम दान के इस विषय को जारी रखते हुए अगले महीने सरल से सरल भाषा में इन चारों अवस्थाओं पर रौशनी डाली जायेगी और इस सिलसिले को अगले मासिक सन्देशों में जारी रखा जायेगा। इन शब्दों के साथ मैं आप सबको सच्चे दिल से सद्भावना देता हूँ कि आप सुख, शान्ति और सन्तोष का अनुभव करें।

सबको राधास्वामी।

आपका सदा ही फ़कीरमय
मानव

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, निल कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित्त आय मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूँ अस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
21-8-83 को होगा ।

Regd. No. 2626574 AUGUST 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humâyun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)